आदिवासी आव्रजन का शहरी अर्थव्यवस्था पर प्रभाव
[इन्दौर शहर के विशेष संदर्भ में]

*कविता अग्रवाल ** प्रो. ज्योति शर्मा

शोधपत्र-अर्थशास्त्र

कलकत्ते का जो जिक्र किया तूने हमनंशी
एक तीर मेरे सीने में मारा कि हाय–हाय ।

बढते शहरीकरण से यह स्थिति न केवल कलकत्ता में वरन भारत के छोटे बड़े सारे शहरों में व्याप्त है, आने वाले कल में शायद भारत का हृदय उन गांवों में न धड़के जिनमें हमारे देश की अधिकांश जनसंख्या निवास करती है । भारत का हृदय उन छोटे मंझोले और बड़े शहरों में धड़केगा जहां ग्रामों से शहरों में आव्रजन के कारण जनसंख्या तेज गति से बढ़ती जा रही है। शहरों की हदें काफी फैल गई हैं शहरों ने आदिवासी व ग्रामीण सभ्यता को अपने रंग में रंगा है, और खनकती नगदी की भाशा सिखाई है, चरम भोगवादी संस्कृति सिखाई है । देश में 1961 में जहां 7.9 करोड़ लोग शहरों में रहते है। वहीं 2001 में यह संख्या 28.5 करोड़ तक पहुंच गई है यानी पिछले तीन दशकों में 350 फीसदी की वृद्धि शहरी आबादी में हुई है । 1991 में जहां देश में 23 महानगर थे 2001 में यह गिनती 35 तक पहुंच गई है ।[1] जन आबादी का शहरों की तरफ बढ़ता यह रूख एक वैश्विक सच्चाई है । हृदय प्रदेष में भी शहरीकरण की रफ्तार काफी तेज है । गांव सिमटते जा रहे है और शहर बढते जा रहे है वर्ष 1901 में मध्य भारत (वर्तमान म.प्र.) में जहाँ शहरों की संख्या मात्र 9 थी, वर्ष 2001 तक यह ऑकडा 368 तक पहुंच गया है । अगली जनगणना तक शहरों की संख्या 400 तक पहुंचने का अनुमान है । पिछले 100 सालों में म.प्र. में 4 गुना शहर बढे हैं ।[2] 2001 की जनगणना के अनुसार म. प्र. की 6,03,48,023 आबादी में से 1,82,21,862 ने एक स्थान से दूसरे स्थान पर आव्रजन किया है।[3]

इसमें ग्रामीण से शहरी आव्रजन प्रमुख है। म.प्र. की 6 करोड़ आबादी का करीब 27 प्रतिषत शहरों में बसा है जिसके वर्ष 2026 तक 4 करोड़ से ज्यादा होने का अनुमान है ।[4] गांवों से सतत् पलायन ने शहरी अर्थव्यवस्थाओं की सेहत बिगाड़नी शुरू कर दी है। शहरों के सामने हर दिन मूलभूत सुविधाओं से जूझने की नई चुनौतियॉं आ रही हैं। पानी, बिजली, सड़क प्रदूषण, अपराध जैसी समस्याओं से निपटना शहरी अर्थव्यवस्थाओं के समक्ष चुनौती है। इसी वैष्विक समस्या के मध्यप्रदेश के सर्वाधिक जनसंख्या वाले शहर इंदौर पर प्रभाव का अध्ययन इस शोध में किया गया है। इंदौर तीव्र गति से बढता हुआ व्यावसायिक शहर है। जहां जनसंख्या वृद्धि का एक मुख्य कारण रोजगार की तलाश में बढता हुआ आव्रजन है ।

अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य :– इन्दौर शहर में जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति का अध्ययन करना, आव्रजन पूर्व एवं आव्रजन पश्चात् आव्रजित आदिवासी श्रमिकों की व्यावसायिक संलग्नता का अध्ययन करना, आव्रजित आदिवासी श्रमिकों के रोजगार परिवर्तित करने की प्रवृत्ति व उनकी आय के मध्य संबंध ज्ञात करना ही प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य हैं।

अध्ययन क्षेत्र :– इंदौर शहर के विभिन्न क्षेत्रों की बस्तियों में अनेक आदिवासी आव्रजित इकाईयॉं निवास करती है । अतः संपूर्ण इंदौर शहर को चार प्रमुख भागों उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पष्चिम में विभाजित किया गया है । शहर की प्रमुख बस्तियॉं जहां आदिवासी आव्रजित इकाईयों की बहुतायत है एकता नगर, गणेश नगर (झुग्गी बस्ती), विद्या नगर, जयश्री, जीत नगर, गणगौर नगर, रानीबाग, सूरज नगर, बिलावली, मालती नगर, है। अतः अध्ययन की परिधि सघन रूप से इंदौर शहर है। प्रस्तुत अध्ययन में 0–9 वर्ष के मध्य आव्रजित आदिवासी इकाईयों को ही अध्ययन में सम्मिलित किया गया है।

1. मध्यप्रदेश–मानव विकास प्रतिवेदन 2007

समंक संकलनः–प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के समंको का प्रयोग किया गया हैं।

प्राथमिक समंक संकलन योजनाः–इन्दौर शहर को चार प्रमुख उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम, क्षेत्रों में बांटकर प्रत्येक क्षेत्र की विभिन्न बस्तियों में से 100 इकाईयों का यादृच्छिक न्यादर्श या दैव निदर्शन (Random Sampling) पद्धति के माध्यम से चयन किया गया है। इस प्रकार कुल 400 इकाईयों का चयन किया गया है।

द्वितीयक समंक संकलन योजनाः– द्वितीयक समंक मुख्य रूप से जनगणना कार्य निदेषालय म.प्र. भोपाल द्वारा एकत्रित प्रवास से संबंधित आंकड़ो, संबंधित वेबसाइट, जिला सांख्यिकी कार्यालय, नगर निगम इंदौर, नईदुनिया प्रकाषन की

* शासकीय कला एवं वाणिज्य, महाविद्यालय, इन्दौर
** माताजीजाबाई, शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, इन्दौर

अपना इन्दौर, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग इंदौर कार्यालय व अन्य विभागीय सूचनाओं के आधार पर एकत्रित किये गए है।

इन्दौर शहर में जनसंख्या वृद्धि—इन्दौर शहर म.प्र. में सर्वाधिक जनसंख्या वाला शहर है । पिछले 11 जनगणना परिणामों में शहर की जनसंख्या में बेतहाषा वृद्धि दर्ज हुई है । वर्ष 1901 में इन्द्रपुर (इन्दौर) शहर की जनसंख्या जहां मात्र 99,880 थी वह 2001 में बढ़कर 15,97,441 हो गई है । वर्ष 2008 में आई.सी.एम.आर. के अनुमान के अनुसार इंदौर शहर की जनसंख्या 17,74,968 दर्ज की गई है । सारणी क्रं. 1 से इंदौर शहर की जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति को दर्शाया गया है।

सारणी क्रमांक 1

इंदौर शहर में जनसंख्या वृद्धि

वर्ष	जनसंख्या
1901	99,880
1911	57,235
1921	1,07,948
1931	1,47,100
1941	2,03,695
1951	3,10,869
1961	3,59,900
1971	5,72,622
1981	8,27,000
1991	10,91,674
2001	15,97,441

स्त्रोत—सिटी प्रोफाईल इन्दौर 2004 पृष्ठ क्रं. 41

इन्दौर शहर तीव्र गति से बढता व्यावसायिक शहर है । यदि इसके इतिहास पर दृष्टि डाले तो यह प्राचीन काल से ही व्यापार व्यवसाय का गढ रहा है। प्रारंभ में इंदौर शहर में प्रमुख रूप से अफीम, कपास, व अनाज का व्यापार होता था जिसका उत्पादन मन्दसौर, निमाड़, देवास, शाजापुर जैसे आसपास के क्षेत्रों में होता था । बाद के वर्षो में इन्दौर सूती वस्त्र उत्पादन का एक प्रमुख केन्द्र बन गया और आस–पास के इन क्षेत्रों के भूमिहीन कृषक रोजगार की तलाश में अपने मूल निवास से पलायन करके इन्दौर शहर में आव्रजित हो गए । वर्तमान समय में भी इन्दौर शहर में व्यापार, व्यवसाय के विकास के कारण रोजगार की बहुतायत के कारण आदिवासी इंदौर शहर में आव्रजित हो रहे हैं ।

आव्रजन पूर्व व्यवसायिक संलग्नता :— शहरी व आदिवासी अर्थव्यवस्था में अनेक अन्तर है ये अन्तर ही मुख्यतः आव्रजन का प्रमुख आधार बनते है इन्हीं अन्तरों से प्रेरित होकर कई आदिवासी अपने ग्राम की अर्थव्यवस्था को छोड़कर शहर की और पलायन कर जाते है । सर्वेक्षण से प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर यह ज्ञात हुआ है कि इन्दौर शहर में आव्रजित इकाइयॉ मुख्यतः धार, झाबुआ, खरगोन, खण्डवा, देवास, महेश्वर, गोगांवा, बडवाह, दतोदा, डूंगर मानपुर सनावद, कुक्षी, बेटमा जैसे अनेक आदिवासी बाहुल्य इलाकों के आन्तरित क्षेत्रों से आयी है ये आदिवासी अर्थव्यवस्थाऍं या तो कृषि प्रधान हैं या वन प्रधान है। शोध से प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर आव्रजन के पूर्व आदिवासी बहुल ग्राम अर्थव्यवस्था में आव्रजित इकाईयों की व्यवसायिक संलग्नता इस प्रकार रही है ।

सारणी क्रं. 2

आव्रजन पूर्व आदिवासी आव्रजित इकाईयों की व्यवसायिक संलग्नता

व्यावसायिक संलग्नता	प्रतिशत
कृषि कार्य	33
मजदूरी (भूमिहीन कृषक)	38
घरेलू व्यवसाय	22
अन्य कार्य	07

स्त्रोतः—सर्वेक्षण के आधार पर

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश सर्वेक्षित आदिवासी अपने मूल निवास स्थान पर कृषि कार्य या कृषि क्षेत्र में मजदूरों के रूप में कार्यरत रहे हैं। केवल 22 प्रतिशत घरेलू व्यवसाय में संलग्न थे । जबकि 7 प्रतिशत अन्य कार्यो में संलग्न थे। शोधकर्ता द्वारा आव्रजन पश्चात् आव्रजित इकाईयों की व्यावसायिक संलग्नताओं का विश्लेषण शोध से प्राप्त निष्कर्षो द्वारा किया गया है जिसे तालिका क्रमांक तीन के माध्यम से दर्शाने का प्रयास किया गया है।

तालिका क्रं. 3

आव्रजन पश्चात् आदिवासी आव्रजित इकाईयों की व्यवसायिक संलग्नता ।

व्यवसायिक संलग्नता	प्रतिशत
बेलदारी	33
स्तारी	4
सेनेटरी	4
लोहारी	0
पुताई	7
विद्युत कार्य	4
घरेलु कामगार	9
ड्रायवर	8
चौकीदार	6
अन्य	25

स्त्रोत :— सर्वेक्षण के आधार पर :

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि वे आदिवासी इकाईयों जो अपने मूल निवास पर कृषि कार्यो में संलग्न थी, उन्होने अपने रोजगार के स्वरूप में परिवर्तन किया है अधिकांश कृषि मजदूरी से निर्माण क्षेत्र के मजदूरों में पुताई, सेनेटरी घरेलू, कामगार, विद्युत कार्य जैसे अर्द्ध कुशल कार्यो में संलग्न हो गये हैं। यद्यपि व्यवसायिक संलग्नता के स्वरूप में परिवर्तन दृष्टिगोचर तो होता है परन्तु वे मजदूर से मजदूर ही रहें है।

सारणी क्रं. 4 रोजगार परिवर्तन एवं आय के मध्य संबंध
अवलोकित आवृत्ति

रोजगार बदलना चाहते है (A)	विभिन्न आय वर्ग (B)				योग
	1000–1500(B_1)	1500–2000(B_2)	2000–2500(B_3)	2500 से अधिक(B_4)	
हाँ (A_1)	(A_1B_1)16	(A_1B_2)24	(A_1B_3)8	(A_1B_4)4	52
नहीं (A_2)	(A_2B_1)44	(A_2B_2)68	(A_1B_3)116	(A_1B_4)120	348
योग	60	92	124	124	400

स्त्रोत सर्वेक्षण के आधार पर

रोजगार परिवर्तन एवं आय के मध्य संबंध शोध से माध्यम से आव्रजित इकाईयों के रोजगार परिवर्तन एवं आय के मध्य संबंध को भी जानने का प्रयास किया गया हैं। प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है कि सर्वेक्षित आदिवासी इकाईयों में 100 प्रतिशत ने आव्रजन पश्चात् अपने रोजगार के स्वरूप में परिवर्तन किया है इसका एक कारण आदिवासी बहुत क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था का कृषि प्रधान होना व इन्दौर शहर की अर्थव्यवस्था का व्यवसाय प्रधान होना है । व्यवसायिक संलग्नता के इस परिवर्तन से आव्रजित आदिवासी इकाईयों की आय के मध्य संबंध को काई वर्ग परीक्षण द्वारा जांच गया ।

शून्य परिकल्पना—आव्रजित व्यक्तियों के रोजगार बदलने एवं उनकी आय के मध्य कोई संबंध नहीं है । ये दोनों स्वतंत्र है । काई वर्ग सारणी में काई 0.5 सार्थकता स्तर पर 3 स्वतंत्र संख्या के लिए काई वर्ग का मूल्य 7.815 है । जबकि काई वर्ग का परिकलित मान 39.01 है जो कि सारणी मूल्य से अधिक है, अतः हमारी शून्य परिकल्पना असत्य है, अर्थात आव्रजित व्यक्तियों के रोजगार बदलने एवं उनकी आय के मध्य महत्वपूर्ण संबंध है ये दोनों स्वतंत्र नहीं है ।

निष्कर्ष :—अतः प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट है कि इंदौर शहर जनसंख्या के आव्रजन से अत्यधिक प्रभावित है इन्दौर शहर के विस्तार को इस जनसंख्या वृद्वि ने अत्याधिक प्रभावित किया है शहरी क्षेत्र की सीमाओं में अप्रत्याषित वृद्वि हुई है । शहरी अर्थव्यवस्था पर इसके अनेक सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव है । आव्रजित आदिवासियों पर भी आव्रजन के अनेक सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव है । आव्रजन का एक सकारात्मक परिणाम आय में वृद्वि है । यद्यपि वे अकुशल श्रमिकों से शहरी क्षेत्र में अर्धकुशल श्रमिकों में परिवर्तित हो गए है, वे अपनी कुशलता में वृद्धि करें तो उनके आय स्तर में और अधिक वृद्धि हो सकती है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1,2 संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोश (यूएनएफपीए) रिपोर्ट 2007 3–डी सारणी सी.डी. (डी–2) प्रवास संबंधी ऑकड़े म.प्र.ज. का.नि.